



SHRI BATA KRUSHNA SAHOO

Shri Bata Krushna Sahoo, popularly known as 'Bata Babu', is a fish farmer of excellence from the state of Odisha. He is an innovative farmer and a social worker who has been motivating many to practice aquaculture by adopting scientific management practices.

2. Born on 19th January, 1952, Shri Sahoo hails from Sarkana village, Balianta block of Khordha district, Odisha. He has been the first fish farmer to establish a private fish hatchery in Odisha and first to adopt induced breeding. He started hapa breeding in 1988 and established his own hatchery in 1995. His pathway has been followed by many and today he is responsible for scaling up more than 24 hatcheries in the state of Odisha. He experimented many technological innovations in aquaculture through Krishi Vigyan Kendra (KVK)-Khordha under ICAR-Central Institute of Freshwater Aquaculture (ICAR-CIFA), Bhubaneswar, Odisha. He has conducted several farm trials that has helped for faster dissemination to many fish farmers of Odisha. Shri Sahoo converted his farm into an experimental station for farm trials on new innovations. He has led team of hatchery owners from Odisha to different states of India to learn advanced technologies in aquaculture. Shri Sahoo produces more than 20 crore of spawn and 1200 kg of fingerlings every year. Fish seeds produced by him crosses the boundaries of the district. On an average his hatchery serves to 386 farmers from 174 villages of eight districts of Odisha which is increasing in every passing year. He is the president and leads the All Odisha Private Hatchery Owners Association. Shri Sahoo serves as an ambassador for the fish farmers of Odisha.

3. Shri Sahoo is a farmer who is selfless and provides technical guidance for more than 4000 fish farmers every year. The government supported him to establish an Aquaculture Field School in 2009 in which he serves as a master trainer. Apart from that Shri Sahoo is the first hatchery owner to adopt off season fish seed production in the state of Odisha using CIFABROOD a broodstock diet developed by ICAR-CIFA. A man with principle is also highly inclined towards traditional knowledge and new technological innovations. The off season fish seed produced for the first time was unique and he paved way for other hatchery owners to adopt this technology. As Shri Sahoo succeeded in off season fish seed production KVK-Khordha, he was able to motivate other hatchery owners across the state of Odisha to adopt this practice.

4. Shri Sahoo has received various awards and honours. He was awarded as Best Fish farmer by ICAR-CIFA (2011), recognised by Farmers Development Agency, Khordha, Ushapurna Memorial Trust, Bhubaneswar (2002) and Krushak Sambad as the Best Fish Farmer. He has a special recognition of being a Master Trainer of KVK-Khordha.





श्री बट कृष्ण साहु

'बाटा बाबू', नाम से लोकप्रिय श्री बट कृष्ण साहु, ओडिशा राज्य के एक उत्कृष्ट मत्स्य पालक हैं। वह एक नवान्वेषी किसान और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जो वैज्ञानिक तौर–तरीके अपनाकर जलकृषि शुरू करने के लिए बहुत से लोगों को प्रेरित कर रहें हैं।

2. 19 जनवरी, 1952, को जन्में श्री साहु ओडिशा के खोर्धा जिला के बलिअंता ब्लॉक के सरकाना गांव से ताल्लुक रखते हैं। वह ओडिशा में निजी फिश हैचरी स्थापित करने और 'प्रेरित प्रजनन' अपनाने वाले पहले मत्स्य पालक हैं। उन्होंने वर्ष 1988 में हापा ब्रीडिंग आरंभ की और वर्ष 1995 में अपनी खुद की हैचरी स्थापित की। कई लोगों ने उनका अनुसरण किया और आज उनके कारण ओडिशा राज्य में 24 से भी अधिक हैचरी स्थापित की जा चुकी हैं। उन्होंने आईसीएआर सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रेशवाटर एक्वाकल्चर (आईसीएआर–सीआईएफए), भुवनेश्वर, ओडिशा के अधीन कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके)–खोर्धा के माध्यम से जलकृषि के क्षेत्र में कई प्रौद्योगिक प्रयोग किए हैं। उन्होंने अनेक फार्म परीक्षण किए हैं जिससे ओडिशा में कई मत्स्य पालकों को जानकारी देने में मदद मिली है। श्री साहु ने अपने फार्म को नए तरीकों के फार्म परीक्षणों के लिए परीक्षण का एक केंद्र बना दिया। कृषि के क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए ओडिशा के हैचरी मालिकों के दल ने उनके नेतृत्व में भारत के विभिन्न राज्यों का दौरा किया है। श्री साहु प्रति वर्ष 20 करोड़ अंडों और 1200 कि.ग्रा. फिंगरलिंगस (मछली के बच्चे) का उत्पादन करते हैं। उनके द्वारा उत्पादित बीज जिले से बाहर भी लोकप्रिय हो रहे हैं। उनकी हैचरी ओडिशा के आठ जिलों के 174 गांवों के औसतन 386 किसानों को सेवाएं प्रदान करती हैं, जिनकी संख्या प्रत्येक वर्ष बढ़ती जा रही है। वह ऑल ओडिशा प्राइवेट हैचरी ओनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष और अगुआ हैं। श्री साहु ओडिशा के मत्स्य पालकों के अग्रदूत हैं।

3. श्री साहु निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले किसान है और वह प्रत्येक वर्ष 4000 से अधिक मत्स्य पालक को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। सरकार ने उन्हें वर्ष 2009 में एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान की, जिसमें वह मुख्य प्रशिक्षक के रूप में सेवाएं देते हैं। इसके अलावा, श्री साहु आईसीएआर–सीआईएफए द्वारा विकसित ब्रूडस्टॉक डाइट सीआईएफएबीआरओओडी का उपयोग करते हुए गैर–मौसमी मत्स्य बीज उत्पादन करने वाले ओडिशा राज्य के पहले हैचरी मालिक हैं। श्री साहु अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहने वाले व्यक्ति हैं, वह पारम्परिक ज्ञान और नई प्रौद्योगिक खोजों के प्रति भी गहरा रुझान रखते हैं। पहली बार गैर–मौसमी मत्स्य बीज उत्पादन करना एक अनोखा प्रयोग था और उन्होंने इस प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए अन्य हैचरी मालिकों के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया। गैर–मौसमी मत्स्य बीज के केवीके–खोर्धा उत्पादन में श्री साहु की सफलता के फलस्वरूप समूचे ओडिशा के हैचरी मालिक इस प्रणाली को अपनाने के लिए प्रेरित हुए।

4. श्री साहु को विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें आईसीएआर–सीआईएफए द्वारा सर्वश्रेष्ठ मत्स्य पालक (2011) के रूप में पुरस्कृत किया गया, किसान विकास एजेंसी, खोर्धा , ऊजापूर्ण स्मृतिन्यास, भुवनेश्वर और कृषक संवाद द्वारा सर्वश्रेष्ठ मत्स्यपालक (2002) के रूप में सम्मानित किया गया, उन्हें केवीके –खोर्धा का मुख्य प्रशिक्षक होने का भी विशेष सम्मान प्राप्त है।